पक्षी स्पीड लिमिट का ख्याल रखते हैं

पक्षी सड़क पर लगे गति सीमा के बोर्ड पढ़ तो नहीं सकते मगर ऐसा लगता है कि वे इस बात को पहचानते हैं कि किसी रास्ते पर गति सीमा कितनी निर्धारित की गई है।

क्यूबेक विश्वविद्यालय के पियरे लेगानो और मॉन्ट्रियाल के मैकगिल विश्वविद्यालय के सिमोन डुकाटेज़ ने प्रयोगशाला से घर जाते हुए पक्षियों का एक अजीब अध्ययन शुरू किया था। उन्होंने पाया कि जिस सड़क पर गति सीमा 50 किलोमीटर प्रति घंटा होती है, वहां सड़क पर बैठे पक्षी तब उड़ते हैं जब कार उनसे मात्र 15 मीटर दूर रह जाती है। दूसरी ओर, यदि उस सड़क पर गति सीमा 110 किलोमीटर प्रति घंटा है, तो वे कार के 75 मीटर दूर रहते ही उड़ जाते हैं। और तो और, अवलोकनों से यह भी समझ में आया कि ये पक्षी कार की गति को देखकर तय नहीं करते कि उन्हें कब उड़ना है। यदि धीमी गति सीमा वाली सड़क पर कोई कार तेज़ी से आ रही हो, तब भी वे 15 मीटर की दूरी का ही ख्याल रखते हैं। इसी प्रकार से यदि तेज़ सड़क पर धीमी कार हो तो भी वे 75 मीटर का फासला रह जाने पर उड़ जाते हैं।

यानी पक्षी आती हुई कार की गति का नहीं बल्कि उस सड़क पर निर्धारित गति सीमा के अनुसार व्यवहार करते हैं। आखिर कैसे?

उपरोक्त शोधकर्ताओं का विचार है कि पक्षी इन कारों को शिकारी समझते हैं और यह समझ लेते हैं कि कुछ पर्यावरणों में शिकारी अपनी तेज़ गति के कारण ज़्यादा खतरनाक होते हैं। शोधकर्ताओं ने यह भी देखा कि मौसम का असर भी इस बात पर पड़ता है कि पक्षी कार के कितने पास आने पर उड़ जाएंगे। आम तौर वसंत के मौसम में वे कार को ज़्यादा नज़दीक आने देते हैं जबकि शरद ऋतु में वे ज़्यादा सावधानी बरतते हैं।

शोधकर्ताओं के मुताबिक इसके दो कारण हो सकते हैं। पहला तो यह हो सकता है कि वसंत ऋतु में पक्षी वैसे ही अधिक फुर्तीले होते हैं और कार के पास आने तक बैठकर इन्तज़ार कर सकते हैं। दूसरा यह भी हो सकता है कि वसंत में सड़कों पर बैठे ज़्यादातर पक्षी हाल ही में उड़ना सीखे शिशु होते हैं, जो सड़क के नियम सीख ही रहे हैं। जैसे भी हो मगर एक बात स्पष्ट है। पक्षी अपने पर्यावरण में खतरे का स्तर भांपकर अपना व्यवहार उसके अनुसार ढालने में सक्षम होते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***